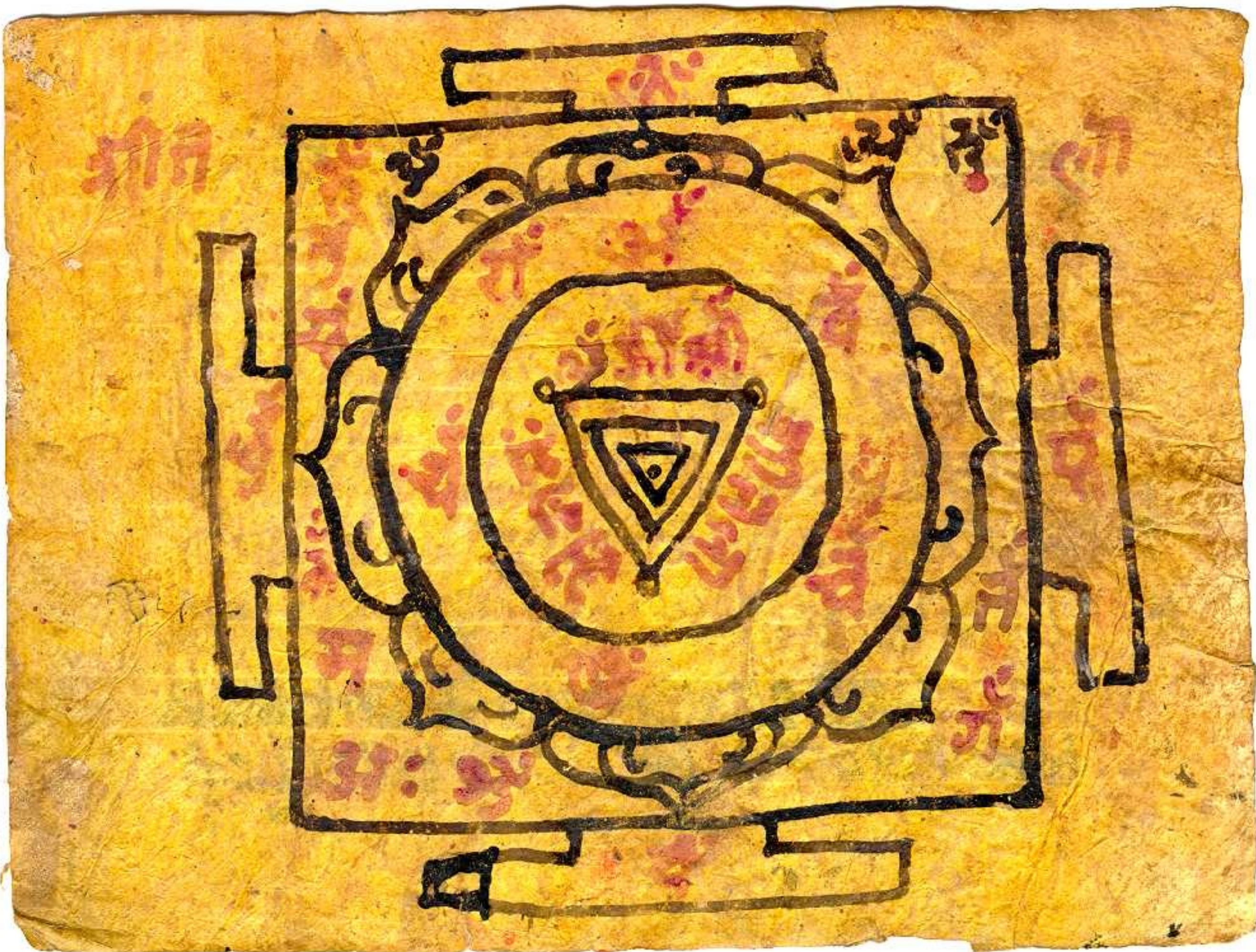




३॥

त

मुखे॥ श्रीतलादेवताये॥ हृदि॥ रेंद्रौ श्रीभु
 वने॥ श्रीरीवीजाय॥ नाभि॥ स्वाहाशक्तये
 २॥ जानु॥ क्रींकीलकाय॥ पादे॥ श्रीतला
 प्रसादसिध्यर्थजेपेविनियोगः॥ सर्वजि
 न्यास॥ श्रीतलेक्रींस्वाहाअस्त्रायफु॥
 श्रीलैअंग॥ सेगुं॥ केतकेत्यांघेदेय॥
 कनिष्ठा॥ श्रीतलेक्रींस्वाहाकरतरपुष्पा
 भ्यांफु॥ एवंषदंग॥ पात्रौपुजा॥ भूतसु
 वि॥ रेंद्रौ श्री॥ आत्मपुजा॥ त्वलिपंचवः

श्रीतला

२

२

आधारादिकमल्लसनाय॥ राशभासना
 य॥ ध्यान॥ श्रीतलासूर्यकर्णांतथाचरव
 गवाहिनीदीर्घदंष्ट्राविरुपाक्षी॥ मार्जनी
 करमण्डितांवर्चनीकेलसोपेतां॥ सर्पा
 कलमष्टकाअतिसीर्णावदना॥ जिह्वा
 लतभीषणारक्तामिमंनयनां॥ घृणि
 तांचमदोत्थितांविस्फोटके॥ समाक्रां
 तादीर्घकेशसुमन्यतां॥ दीर्घमुखैः
 श्रुतौतां प्रशान्तंनमोभ्यहं॥ ध्या

नेपुष्य२॥रहागदेति॥प्राणप्रतिष्ठा॥
 पायादिधुपादिपीनि॥तथाजन्ति॥३
 अंडींशींशींती॥सीदेवीअम्मापादूकांप
 जयामिनेमः३॥षदंग॥कलिमूलं॥धुप
 दीनेचदेजपसोत्रा॥॥वृत्तीनातृत्वाच
 म्यसप्यआजना॥अदिकाका॥मुकगोत्र
 मुकनामनीनानांवेधयदारिद्रमातृपिः
 तृपुत्रवधुपियोगादिध्वंशसोभाग्यसो
 धाधनधांन्यप्राप्तयेशीतलावतकहेंपु ३

व्यभाजनसुयोजयामि२॥सिद्धिरस्तु॥तृ
 रावेम्यसूर्यार्घ्य॥आकृते॥गुरुनमसका
 रा॥न्यासा॥पूर्ववजलपात्रात्मप्रजातं॥आ
 वाहना॥आवाहयामित्वादेवींशींलेवरदाय
 णि॥रासभादिपुसंस्थापयजोगृहान
 श्रीतले॥आसनं॥आसनकेल्ययामासेरा
 ३वि सभादिनिर्मितं॥मनसाध्यातृपुष्पाद्यैः
 गृहानपरमेष्ठरी॥पाद्यं॥दधियुग्यते२
 १घृदेवीसर्करामधुभिर्घृतं॥पाद्यंगृहान
 ये३

३॥

जननीयेनसेसफलाकया॥हस्तार्थ॥यवपु
 ष्याक्षतेयुक्तितिलदभादिसंयुतं॥अर्घ्यगः
 हानजननीदुग्धंयुक्तंपरमेश्वरी॥कलश
 पूजा॥ब्रह्मर्षी॥३॥गंगा॥३॥नर्मदा॥कावे
 र्छी॥गण्डकी॥कौशीकी॥चेरुभागायै
 २॥सप्तनेत्रिभ्यो॥सप्तसागरे॥अस्यस्था
 मादि॥सपूर्णाकलसाय॥तुमुजोला॥ग
 ण्डापूजा॥गणपतये॥विष्णुश्वराय॥
 लम्बादरा॥लंबोदरादि॥तुमुजोला॥न

५

त

दाय॥भद्राय॥सुमनेसाय॥सुश्रीला
 य॥शुभगाय॥पंचगोमात्रिकेभ्यो॥पीठे
 पञ्चाराकोमारी॥ब्रह्माण्डासमातृके
 भ्यो॥नवदुर्गाय॥पराशक्तये॥वामनस्त
 पाय॥रक्तलोचनाय॥कौमारीमूर्तये॥र
 क्तवर्ना॥पंचवलि॥हेतुकादिक्षत्रपारा
 य॥प्रयागादि॥अश्विस्तांगादिभैरव॥
 स्थानक्षत्र॥बहिष्कारंगोभ्यो॥सर्व
 भ्योभूतेभ्यो॥स०पिसाचेभ्यो॥लङ्काजो

ल॥ स॥ यो॥ दि॥ ॥ पा॥ सु॥ का॥ दे॥ व॥ पू॥ जा॥ ॥ ग॥ ग॥ प॥ त॥
 य॥ ॥ ग॥ र॥ ॥ व॥ त॥ ॥ स॥ त्र॥ ॥ न॥ मि॥ ॥ भ॥ गि॥ गो॥
 म॥ हा॥ का॥ ल॥ वि॥ ना॥ य॥ का॥ य॥ ॥ च॥ न्दा॥ य॥ ॥ दे॥ यै॥
 ॥ च॥ ग॥ ग॥ ये॥ ॥ अ॥ स्त्रा॥ ये॥ ॥ आ॥ वा॥ ह॥ न॥ ॥ ध॥ र्मा॥ य॥
 श॥ ना॥ ये॥ ॥ दे॥ यै॥ ॥ श॥ ना॥ ये॥ ॥ वै॥ रा॥ ना॥ ये॥ ॥ श्व॥
 र्मा॥ य॥ ॥ अ॥ ध॥ य॥ ॥ क॥ र्क॥ क॥ न्दा॥ य॥ ॥ आ॥ धा॥
 र॥ म॥ त्ता॥ दि॥ ॥ ॥ श्री॥ त॥ ला॥ ये॥ ॥ अ॥ श्रि॥ त॥ ला॥ ये॥
 गु॥ ला॥ ये॥ ॥ ग॥ ला॥ ये॥ ॥ म॥ हा॥ रा॥ ये॥ ॥ व॥ द॥ ला॥ ये॥ ॥ दु॥ र्गा॥
 ये॥ ॥ म॥ ग॥ ला॥ ये॥ ॥ व्या॥ न॥ ॥ प॥ र्व॥ व॥ त॥ ॥ र॥ ग॥ ना॥ ॥ ग॥ ग॥
 दि॥ म॥ लि॥ ले॥ दे॥ वी॥ य॥ त॥ मि॥ त्ति॥ ग॥ चि॥ त॥ य॥ ॥ स्ना॥ न॥

र्थ॥ च॥ ग॥ हा॥ ने॥ दं॥ शी॥ त॥ ले॥ प॥ र॥ मे॥ स्त॥ री॥ ॥ पं॥ चा॥ मृ॥
 ता॥ ॥ दु॥ ग्ग॥ च॥ प॥ य॥ स॥ च॥ वे॥ म॥ प॥ र॥ स॥ त॥ था॥ ॥
 पं॥ च॥ मि॥ तं॥ ग॥ हा॥ ने॥ त्ति॥ प॥ श॥ न॥ शी॥ त॥ ले॥ श्व॥ री॥ ॥ भु॥
 यो॥ द॥ के॥ ॥ भु॥ जो॥ द॥ के॥ न॥ तो॥ य॥ न॥ ह्मा॥ नी॥ यं॥ स॥ फ॥ ॥
 ती॥ क॥ र॥ ॥ म॥ या॥ नि॥ वे॥ दि॥ त॥ र॥ ए॥ ह्मा॥ ने॥ क॥ र॥ प॥ र॥
 मे॥ स्त॥ री॥ ॥ गं॥ गा॥ ज॥ ले॥ ॥ इ॥ वे॥ मे॥ गं॥ ग्य॥ ॥ व॥ स॥ ॥ को॥
 म॥ ल॥ प॥ र॥ को॥ शी॥ य॥ ॥ वि॥ चि॥ त्र॥ म्म॥ र॥ भ॥ ष॥ णां॥ ॥ श॥
 री॥ र॥ शी॥ ॥ भ॥ न॥ के॥ र॥ ग॥ हा॥ ने॥ प॥ र॥ मे॥ श्व॥ री॥ ॥ च॥ न्द॥ न॥
 म॥ ल॥ या॥ च॥ र॥ स॥ भ॥ त॥ सु॥ गं॥ वि॥ व॥ स॥ सु॥ स॥ यु॥ त॥

केतुसमंयुतं वापि चन्द्र न प्रति गृह्यतीति ॥ सिं
 ध्वर ॥ सिन्दुरस्य संकाशं जयोराजसमः
 पुंभं ॥ गृहाणां श्रीतले देवी येन सौभाग्यमा
 पुयात् ॥ तिसा ॥ भूषणं केळीपत्रपद्मादि
 कुण्डपुष्पादिसाकृतिं ॥ स्नानरिष्यादिनां जा
 तां साखं प्रति गृह्यतां ॥ जजका ॥ सप्ततनु स
 मापेतस्ये ज्वलं श्रीतलेश्वरी ॥ यत्नोपविते दे
 वे हि गृहाणा परमेश्वरी ॥ तासां ॥ सप्तश्च
 गर्भमालिकां कालिके प्रभू ॥ गृहाणा सप्त

ससिंघी प्रसीद परमेश्वरी ॥ त्यांमाला ॥ वि
 चित्रचित्रपुष्पानियथा कालो नितानि च ॥
 गृहान जगत्मातृ प्रसीद परमेश्वरी ॥ जाती
 जाती नामपि सर्वा सा भूले जाती प्रशस्यते ॥
 जाती पुष्पपुदानेन गं स्वैर्वसुमो दत्ते ॥
 योसां ॥ चपकं स्वर्णवर्णं भं चप पुष्पपि स्य
 रयत ॥ तेन दानेन देव्यस्य यथोक्तं फलदा
 भव ॥ धं च ॥ कंदर्पभस्म संकाशं दमनं पुष्प
 मुतमं ॥ येन दत्ते न देवे हि शत्रुविनाशनं ॥
 पद्मा ॥ पद्मपुष्पं च पद्माया का सा गारयदा

श्री॥ पद्मपाति त्रपद्माक्षी समपया मिश्रीत
 त॥ नीलोत्पल॥ नीलोत्पलं चे पुष्पा नाउत
 मातिसंस्तक॥ गृहानशीतले देवी सोख्यं दे
 हि मे इश्वरी॥ चवस्वा॥ शितकुमुदविशिष्टर
 त्तैर्वाग्निचमातसदपदकमलेस्मिन् नव्यय
 मिप्रसीद॥ यदि हितं गतं क्षमयेति नि
 त्यहिररूपे पाहिविष्वं नमस्तो॥ गुत आक्षे
 उर्वाक्षते स्वांपरिपूजयामि संख्याविधाने
 नानेकानरूपे अपूर्णपूर्णतु विधायनी

श्री सुरेशावागीश्वरपूजि मुद्रुः॥ संख्याः
 ५५॥ संख्याधूपनयीत्यादि यंदिने
 दैत्यदुरये निरस्य भक्तैः॥ आशक्तैर्भ्यो देहि
 विज्ञानं सिद्धिं शुद्धिं प्रार्थयेत् स्वप्नसीद॥ दीप
 मुद्रुकासो॥ क्षीर॥ पायसं च चूतं देन मम
 शर्करासितयुतं निजशक्त्या॥ मितरुणां व
 रुणां तैः॥ आचमना॥ वस्त्राणोदरतीर्थेषु ज
 जेनीत॥ रेवादिगंगादिभिः सिद्धेनामः
 पिसप्तभिश्च सहितं यस्मिं जले जाकृषी

दं॥ धनं धान्यं प्रदेदेवी पूजा गुरु नमो सते॥
 शंख भो पुत्रा॥ त्वं पुरा सागरे ति॥ धार्य कस्या
 दुःख॥ गौरी पूजा॥ सोत्र॥ श्री शीतला यनम
 ॥ श्री तले त्वरदा येन भक्तानां च प्रजायते
 दर्शनादेव सौख्यं च सुखं चैव वदस्यतः॥ १॥
 सतीकाच॥ श्री तलां सूर्य कर्णा चतुर्था त्वं
 गविहिनी॥ दीर्घा दुष्टा विरुपाक्षी श्री तलाचं
 प्रसीद मे॥ २॥ धरात्मजे नवारेण पूजां चैव त
 शाकला॥ तया तुष्टा जगदा श्री श्री तलावरदा

२

२

सदा॥ हरिद्रात नुलेशुर्गैः पूजयित्वा वि
 धानतः॥ वाला नां शान्तिकर्त्रे च श्री तले
 देवी चण्डिका॥ ५॥ वाला नारक्षणा धार्य
 तव नाम स्मरन्ति ये॥ वाला नां शान्तिकर्त्री
 च श्री तले वरदा भव॥ ५॥ रक्तवर्णा हरि चै
 कज्ये तदा हविर्माक्षणी॥ श्री तलावरदा
 तेषां तव नाम स्मरन्ति ये॥ ६॥ दुर्गारूपा हि
 देवि त्वं सर्वेश्वर शान्तिकारिणी॥ स्मरन्ति च दिवा
 रात्री चारोग्य पुष्टि वृद्धन॥ ७॥ नमस्तु श्री

नन्दे वीशीतले कुरुवारणा ॥ त्रैलोक्यचरित्र
 नन्दे वीशीतले वरदासदा ॥ ८ ॥ सोत्रं चैव प
 ठेद्यस्तु तस्य रोगभयं कतेः ॥ तव स्मरः
 एमात्रेषु सधदुःखनिवारयते ॥ २ ॥ पंः
 चोगश्रवणं कुर्यात्तस्य तुष्टासदेवहि
 ॥ तस्य कालस्य मेख्यं हि क्षिप्रं सन्ममवि
 क्षारार ॥ १० ॥ शीतले यस्मरति त्यागुवः
 तित्तिहर्त्रियां ॥ धनदा पुत्रदा चैव तेषां
 मातः प्रसीद मे ॥ ११ ॥ सुवन्ति देवताः स

कुरु न योदानका सत्था ॥ तेषां चैव वरो
 दातो तुष्टात्यन्दे विशीतले ॥ १२ ॥ तव दशः
 नमात्रेणात्वां शिषंते नैव वर्जयते ॥ घृत
 पक्कमले स्नानं कदाचित् त्रैवकारयते ॥
 ३ ॥ अन्तदेव नये नृलोषयंत नैव ज
 यते ॥ यस्य होमादिनैवैता मारुध्य स
 माचरेत् ॥ १४ ॥ चरणोदके श्रुतं देवीश
 रीरं यो नैविचयते ॥ तस्य कालस्य दे

११ देवस्यै रयं भवति तत्क्ष नात् ॥ १५ ॥ ७
 हा ना जाकि नी ना चेत्ये सादात्म्यं न
 हि ॥ यस्य तुष्टाभिदेवित्वं त्रिदशास्य
 सै मुरया ॥ १६ ॥ वे न नात्स्मरणात्पु म्यात्
 शीतलेते नमो नमः ॥ यस्मरति च त्या मा
 तः शीतले २ त्विति ॥ १७ ॥ राजा चार पठः
 यस्तु शीतला तस्य तुष्ट्यति ॥ विरंचि हरि
 रुदे श्च स्मर्यते त्यां सदेव हि ॥ १८ ॥ तेषां

११

११

त्वया वरी दत्तो पुरा रुदेणा भाषितं ॥ १९ ॥ स
 मुरया चैव यः ॥ नोति चैव लोके ॥ १२ ॥ सोपि मु
 क्तो भवेच्छी वृं बालका नास्ते संशयः ॥ शीतला २
 चैव रणा का गणा की त था ॥ २० ॥ महा ला व द ला चैव
 षणा माते नमो नमः ॥ रुदं तो व पठे यस्तु कृ त्वा प
 जा वि द्यो नतः ॥ २१ ॥ सर्व सिद्धि भवेत स्य त्रे वि
 मि चैव भाषितं ॥ शान्ति भवे चैव ला ना शीतल
 याः पु सा दतः ॥ २२ ॥ क्षी र ख रा दा भो ज्ये श्च वा
 स्मि नां श्ये यत र्प चर ॥ ष पंच वा चतु श्चैव वा

स्वाहेतु कमधापि वा ॥ २३ ॥ विप्रभोज्यं प्रदत्तं
यशीत लाष्टीति काम्यया ॥ शीत लाष्टीति क
मैस्तुके त्वास्तौ त्रसदानरे ॥ अनै त्रसरं ॥ ३ ॥
हमापराजा ॥ दक्षीणा ॥ नचन ॥ कथासवगां ॥
आशिर्वाद ॥ न्यास ॥ स्तुत्य साक्षी पाया ॥ का
यनवाचा ॥ अनहीनेति ॥ ४ ॥ संरूप
भाडु अदि पपर वषी रो ज १ सिद्ध ५ ॥ श्री
नरी नु रा जं नो यादा ज्ञान व्रत